BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION

An Abode Of Education

Kandri, Mandar, Ranchi

B.Ed. 2019-21

ASSIGNMENT

C8, C9, C10

GUIDED BY

C8- Salma Khatoon
C9- Rakesh Kumar Rai
C10- Madhu Ranjan

SUBMITTED BY

GANGAMANI KUMARI
ROLL NO - 43
CLASS - B.Ed 2nd Year

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आभार ज्ञापन

शिक्षा एक द्विपक्षीय प्रक्रिया है। इसमें सीखना सिखाना महत्वपूर्ण है। इसमें हिंदी विषय पर अध्ययन करने का अवसर मिला।

इस Assignment कार्य को प्रस्तुत करने में हमारी शैक्षणिक सचिव दीपाली परासर प्रभारी प्राचार्य राकेश कुमार राय एवं व्याख्याता सलमा खातून ,मधु रंजन ने विशेष योगदान दिया। जिसके लिए मैं धन्यवाद देती हूँ।

मैं अपने माता – पिता सभी मित्रों एवं परिजनों को धन्यवाद देती हूँ।

धन्यवाद !

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

INDEX

S.N.	Topics	Page No.
1.	C-8 – राष्ट्रवाद का शिक्षा में अंतः संबद्ध रविन्द्रनाथ टैगोर के संदर्भ में कीजिए।	01–09
2.	C9 – समावेशी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करें। समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकता का विस्तृत वर्णन करें।	10–17
3.	C10 – प्रश्नावली क्या है? इसके गुण, दोष और प्रकार का वर्णन करें।	18–26

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

राष्ट्रवाद :—

राष्ट्रवाद की परिभाषा और अर्थ को लेकर व्यापक चर्चाएँ होती रहती है। राष्ट्रवाद की सुस्पष्ट और सर्वमान्य परिभाषा करना आसान नहीं है।

राष्ट्रवाद का एक सीमित अर्थ एक ऐसी एकता की भावना या सामान्य चेतना जो राजनैतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, भाषाई, जातीय, सांस्कृतिक व मनोवैज्ञानिक तत्वों पर आधारित रहती है। राष्ट्रवाद उस ऐतिहासिक प्रक्रिया का प्रतिपादन करता है जिसके द्वारा की राष्ट्रीयता, राजनीतिक एककों का रूप धारण कर लेती है।

यह वह भावना है जिससे प्रेरित होकर वे लोग एक निश्चित एवं सशक्त राष्ट्रीयता का निर्माण करते है और संसार में अपने लिए विशिष्ट पहचान बनाना चाहते है। राष्ट्रवाद की भावना एक प्रकार की सामूहिक भावना है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

⇒ टैगोर का जीवन परिचय :—

- नाम :— रवीन्द्रनाथ टैगोर
- जन्म :— 7 मई 1861 (कोलकाता)
- मृत्यु :— 7 अगस्त 1941
- व्यवसाय :— लेखक, कवि, नाटककार, चित्रकार
- भाषा :— बांग्ला, अंग्रेजी
- साहित्यिक आंदोलन :— आधुनिकतावाद
- सम्मान :— नोबल (साहित्य)
- जीवन साथी :— मृणालिनी देवी (1874-1902)

रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई 1861 को कोलकाता के जोड़ासाँको ठाकुरवाड़ी में हुआ। उनके पिता का नाम देवेन्द्रनाथ टैगोर और माता का नाम शारदा देवी थी। उनकी आरंभिक शिक्षा प्रतिष्ठित सेंट जेवियर स्कूल में हुई। उन्होंने बैरिस्टर बनने की इच्छा में 1878 में इंग्लैंड के ब्रिजटोन में पब्लिक स्कूल में नाम लिखाया फिर लंदन

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

विश्वविद्यालय में कानून का अध्ययन किया किंतु बिना डिग्री लौट आए।

वे अपने माता-पिता के 13वीं संतान थे। बचपन में उन्हें प्यार से "रबी" बुलाया जाता था। अपने जीवन में उन्होंने एक हजार कविताएँ आठ उपन्यास, आठ कहानी संग्रह और विभिन्न विषयों पर अनेक लेख लिखे। उनके द्वारा लिखे गए 2000 से अधिक गीतों में से 2 गीत आज भारत और बांग्लादेश के राष्ट्रगान है।

जब 51 वर्ष की उम्र में वे अपने बेटे के साथ इंग्लैंड जा रहे थे तब वे अपनी कविता संग्रह 'गीताजलि' का अंग्रेजी में अनुवाद करना प्रारंभ किया। जब वो अनुवाद उनके अंग्रेजी मित्र रोथेंस्टिन के हाथ लगा तो वे मंत्रमुग्ध हो गए। सितंबर 1912 में गीतांजलि की अंग्रेजी अनुवाद लंदन के साहित्यिक गलियारों में आग की तरह फैल गई, इसके 1 साल बाद 1913 में उन्हें 'नोबल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

→ टैगोर का शिक्षा दर्शन :-

उन्होंने अपनी पुस्तक "Personality" में लिखा है - "सर्वोत्तम शिक्षा वही है, जो संपूर्ण सृष्टि से हमारे जीवन का सामंजस्य स्थापित करती है।"

संपूर्ण सृष्टि से टैगोर का अभिप्राय है - संसार की चर और अचर, जड़ और चेतन सजीव और निर्जीव सभी वस्तुएँ।

शिक्षा के क्षेत्र में गुरुदेव के अपने अनुभव थे। इन्हें बचपन में अपनी घरेलु शिक्षा के बंधन और समय की स्कूली शिक्षा की बुराईयों को सहन करना पड़ा था। आगे चलकर यह अनुभव ही इनके शिक्षा दर्शन के आधार बने। 1901 में इन्होंने अपने शैक्षिक विचारों को मूर्तरूप लेने के उद्देश्य से बोलपुर के निकट स्थापित 'शांति निकेतन' आश्रम में 'ब्रह्मचार्य आश्रम' की स्थापना की। 1901-1941 तक गुरुदेव ने शिक्षा के विषय में भी खूब सोचा और खूब लिखा।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

गुरुदेव ने अपने समय की अंग्रेजी माध्यम से चलने वाली शिक्षा को अव्यवहारिक बताया और मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा देने पर बल दिया। इसके अनुसार शिक्षा से जनसाधारण की भौतिक एवं माध्यमिक दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति होनी चाहिए।

(1) छात्रों में संगीत, अभिनय एवं कला का विकास हो।

(2) भारतीय विचारधारा एवं समाज की पृष्ठभूमि का स्पष्ट ज्ञान प्रदान किया जाए।

(3) छात्रों को अधिकतम उत्तम मानसिक भोजन दिया जाना चाहिए।

(4) नगर की गंदगी और अनैतिकता से दूर प्रकृति के घनिष्ठ में शिक्षा दी जाए।

(5) शिक्षा भारत के अतीत एवं भविष्य पर आधारित हो।

(6) शिक्षा का समुदाय से घनिष्ठ संबंध है।

(7) शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो।

(8) शिक्षा सर्वांगिण विकास वाला होना चाहिए।

(9) जनसाधारण तक शिक्षा के लिए पुनः देशी प्राथमिक विद्यालय खोले जाएं।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(10) यथासंभव शिक्षा विधि का आधार जीवन, प्रकृति और सामाजिक वास्तविकता वाला होना चाहिए।

राष्ट्रवाद और शिक्षा :–

शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि व्यक्तियों का सामाजीकरण करे और उन्हें एकता के सूत्र में बाँधे। कोई राष्ट्र तभी प्रगति कर सकता है, जब प्रत्येक नागरिक को शिक्षा प्राप्त हो, जिसके द्वारा देश का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन अधिक अच्छा हो जाता है।

राष्ट्र तब भ्रष्ट हो जाता है, जब उसमें अंधविश्वास पनपता है। दूषित परंपराएँ होती हैं और खराब रीति-रिवाज होते हैं। इन सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए और राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ाने के लिए उपर्युक्त शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है।

शिक्षा नागरिकों का ध्यान इन सामाजिक दोषों की ओर खींचती है और ऐसा संवेगात्मक तथा

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बौद्धिक वातावरण सृजन करती है, जो समाज को शुद्धता और भलाई की ओर ले जाती है।

भारतीय शिक्षा को निर्देशित होना चाहिए। राष्ट्रीय भावना को बढ़ाने और सामाजिक सुधारों को लाने की ओर। राष्ट्रीयता की शिक्षा देने के लिए यह भी अनिवार्य है कि व्यक्तियों को यह सीखाया जाए कि वह अपने हित का बलिदान राष्ट्र के हित के लिए करें। यह भी अनिवार्य है कि नागरिकों में देश के कानून के प्रति श्रद्धा जाग्रत की जाए।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष (conclusion) :—

रविन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार राष्ट्रवाद का शिक्षा में संबंध इस प्रकार समझा जा सकता है। कि शिक्षा ही राष्ट्रवाद के उन्मूलन की एक प्रमुख कड़ी है। राष्ट्रवाद समाज तथा राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधे रखती है। शिक्षा राष्ट्रीय एकता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

टैगोर जी ने अपने अनेक रचनाओं में राष्ट्रवाद एवं शिक्षा के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, जिससे एक प्रगतिशील राष्ट्र का नींव रखा जा सके।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Que. समावेशी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट करें। समावेशी शिक्षा के उद्देश्यों की आवश्यकताओं का विस्तृत वर्णन करें।

⇒ **समावेशी शिक्षा :-**

समावेशी शिक्षा वह शिक्षा होती है, जिसके द्वारा विशिष्ट क्षमता वाले बालक जैसे - मंदबुद्धि, अंधे बालक, बहरे बालक तथा प्रतिभाशाली बालकों को एक साथ ज्ञान दिया जाता है। अर्थात् समावेशी शिक्षा में प्रतिभाशाली बालक तथा सामान्य बालक एकसाथ कक्षाओं में शिक्षा ग्रहण करते हैं।

समावेशी शिक्षा के द्वारा सर्वप्रथम छात्रों के बौद्धिक शैक्षिक स्तर की जाँच की जाती है, तत्पश्चात् उन्हें दी जाने वाली शिक्षा का स्तर निर्धारित किया जाता है। अतः यह एक ऐसी शिक्षा प्रणाली है, जो कि विशिष्ट क्षमता वाले बालकों हेतु ही निर्धारित की जाती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

परिभाषाएँ :—

① स्टीफन तथा ब्लेकहर्ट :—

"शिक्षा की मुख्य धारा का अर्थ बाधित (पूर्ण रूप से अपंग नहीं) बालकों की सामान्य कक्षाओं में शिक्षण व्यवस्था करना है। यह समान अवसर मनोवैज्ञानिक सोच पर आधारित है, जो व्यक्तिगत योजना के द्वारा उपयुक्त सामाजिक मानकीयकरण और अधिगम को बढ़ावा देती है।"

② परशेल :—

"समावेशी शिक्षा के कुछ कारण योग्यता, लिंग, प्रजाति, जाति, भाषा, चिंता स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्तर, विकलांगता, लिंग व्यवहार या धर्म से संबंधित होते हैं।"

③ अन्य शिक्षाशास्त्री :—

"समावेशी शिक्षा को एक

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है; जो कि शिक्षा को अपने में सिमटे हुए दृष्टिकोण को मुक्त करती है।"

(4) अन्य शिक्षाशास्त्री :—

"समावेशी शिक्षा अधिगम के ही नहीं, बल्कि विशिष्ट अधिगम के नष्ट आयाम खोलती है।"

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

उद्देश्य :-

समावेशी शिक्षा के उद्देश्य निम्न हैं :-

(1) शारीरिक दोषयुक्त विभिन्न बालकों की विशेष आवश्यकताओं की सर्वप्रथम पहचान करना तथा निर्धारण करना ।

(2) शारीरिक दोष की दशा को बढ़ने से पहले कि वे गंभीर स्थिति को प्राप्त हो, उनके रोकथाम के लिए सर्वप्रथम उपाय किया जाना । बालकों के सीखने की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कार्य करना की विभिन्न नवीन विधियों द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना ।

(3) शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों का शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना ।

(4) शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों को पुर्नवास कराया जाना ।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(5) शारीरिक रूप से विकृतियुक्त बालकों की शिक्षण समस्याओं की जानकारी प्रदान करना तथा सुधार हेतु सामूहिक संगठन की तैयारी किया जाना।

आवश्यकताएँ :—

कुछ समय पहले मनोवैज्ञानिकों ने विचार दिया कि समावेशी शिक्षा हमारे सामान्य विद्यालयों में दी जाए जिससे सभी बालकों को शिक्षा के समान अवसर मिलें। शिक्षा विद् भी इस प्रकार की शिक्षा के पक्षधर हैं तथा इसे निम्न कारणों से उचित बताते हैं :—

(1) सामान्य मानसिक विकास संभव है :—

विशिष्ट शिक्षा में मानसिक जटिलता मुख्य है। अपंग बालक अपने आपको दूसरे बालकों की अपेक्षा तुच्छ तथा हीन समझते हैं, जिसके कारण उनके साथ पृथकता से व्यवहार किया जा रहा है। समावेशी शिक्षा में अपंगों को सामान्य बालकों के साथ मानसिक रूप से प्रगति करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

② सामाजिक एकीकरण को सुनिश्चित करती है :-

अपंग बालकों में कुछ सामाजिक गुण बहुत संगत होती है। अपंग बालक अधिक संख्या में सामान्य बालकों का संग पाते हैं तथा एकीकरणता के कारण वे सामाजिक गुणों को अन्य बालकों के साथ ग्रहण करते हैं। उनमें सामाजिक, नैतिक, गुण, प्रेम, सहानुभूति आदि गुणों का विकास होता है।

③ समावेशी शिक्षा कम खर्चीली है :-

निःसंदेह विशिष्ट शिक्षा अधिक महंगी तथा खर्चीली है। इसके अलावा विशिष्ट अध्यापक एवं शिक्षाविदों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी अधिक समय लेते हैं। दूसरी ओर समावेशी शिक्षा कम खर्चीली तथा लाभदायक है। विशिष्ट शिक्षा संस्था को बनाने तथा शिक्षण कार्य प्रारंभ करने में कई स्त्रोतों से भी सहायता लेनी पड़ती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(4) समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकीकरण संभव :-

विशिष्ट शिक्षण व्यवस्था की अपेक्षा समावेशी शिक्षण व्यवस्था में सामाजिक विचार-विमर्श अधिक किए जाते हैं, अर्थात् उच्चारण अधिक हैं। अपंग तथा सामान्य बालक में सामान्य शिक्षा के अंतर्गत एक प्राकृतिक वातावरण बनाया जाता है।

(5) शैक्षिक एकीकरण संभव है :-

शैक्षिक योग्यता सामान्यतः समावेशी शिक्षा के वातावरण द्वारा संभव है। शिक्षाविदों का ऐसा विश्वास है कि विशिष्ट शिक्षा संस्था एक बालक के प्रवेश के पश्चात् समान शैक्षिक योग्यता रखने वाले अपंग बालकों द्वारा उनके गुणों का अर्जन किया जाता है।

(6) समानता के सिद्धांत का अनुपालन करना है -

भारत में सामान्य शिक्षा व्यापक रूप से विस्तार की संवैधानिक व्यवस्था की गई है और साथ-साथ शारीरिक रूप से बाधित बालकों के लिए शिक्षा को व्यापक रूप देना भी संविधान के अंतर्गत दिया गया है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष (conclusion) :-

समावेशी शिक्षा आज के युग में महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। इससे समाज में व्याप्त सामान्य एवं अपंगों के बीच की दूरी को कम करने में मदद मिलती है, जिससे कि अपंग बालक अपने आप को हीन न समझे तथा बराबरी के साथ शिक्षा प्राप्त कर भविष्य उज्जवल कर सके।

समावेशी शिक्षा अपंग बालकों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने का कार्य करती है, जिससे कि वे समाज एवं देश में बराबरी के साथ आत्मनिर्भर होकर जीवन-यापन कर सकें।

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Que. प्रश्नावली क्या है ? इसके गुण - दोष एवं प्रकार का वर्णन करें।

⇒ प्रश्नावली :-

प्रश्नावली अध्ययन विषय से संबंधित प्रश्नों का एक संरचित समूह है, जिसमें सूचनाएँ संकलित करने के लिए वैकल्पिक प्रश्नों में कोष्ठक तथा लिखित उत्तरों के लिए खाली स्थान उपलब्ध रहता है। इस माध्यम के द्वारा विस्तृत क्षेत्र में सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती है। इसके लिए उत्तरदाता का शिक्षित होना आवश्यक है। साथ ही प्रश्नों का चयन, शब्दावली, प्रश्नों का प्रकार, प्रश्नों की विषयवस्तु और क्रम आदि सभी प्रश्नावली की रचना में महत्त्वपूर्ण होते हैं। सामाजिक अनुसंधान में प्राथमिक तथ्यों के संकलन हेतु प्रश्नावली विधि का प्रयोग होता है।

शिक्षित सूचना दाता एवं

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

विशाल, विस्तृत क्षेत्र के सूचना दाता से तथ्य संकलन। प्रश्नावली विषय अथवा समस्या से संबंधित अनेक प्रश्नों की सूची होती है। जिसे अध्ययन-कर्ता सूचनादाताओं के पास डाक द्वारा भेजता है। जिसे सूचनादाता स्वंय भरकर लौटाता है। प्रश्नावली विधि की खोज 1998 में लंदन में की गई थी।

परिभाषाएँ :—

सैनपाऊ यंग :—

सैनपाऊ यंग कहते हैं, "प्रश्नावली प्रश्नों की एक ऐसी अनुसूची है, जिसे कि निदर्शन के रूप में चुने हुए व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेजा जाता है।"

Attested

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

बोगार्डिस :—

प्रश्नावली की परिभाषा में बोगार्डिस कहते हैं— "प्रश्नावली विभिन्न व्यक्तियों को उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित की गई एक प्रश्नों की खुली सूची है।"

गुडे एवं हॉट :—

गुडे एवं हाट के अनुसार "सामान्यतः प्रश्नावली शब्दों से तात्पर्य प्रश्न के उत्तर प्राप्त करने से है।"

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

5. प्रश्नावली के प्रकार :-

(1) तथ्य संबंधी प्रश्नावली :-

इस प्रश्नावली का प्रयोग किसी समूह की सामाजिक, आर्थिक दशाओं से संबंधित जानकारी को संग्रह करने के लिए किया जाता है।

(2) मत एवं मनोवृति संबंधी प्रश्नावली :-

जब किसी भी सूचना दाता की रूचि, राय, मत, विचारधारा, विश्वास एवं दृष्टिकोण के बारे में जानना चाहते हैं।

(3) संरचित प्रश्नावली :-

इस प्रकार की प्रश्नावली का उपयोग साक्षात्कार-कर्ता या अनुसंधानकर्ता निर्माण अनुसंधान प्रारंभ करने से पूर्व विषय पर लोगों की राय सामाजिक स्वास्थ्य जन कल्याण की

Attested
Principal
Bharathi College of Education

योजनाएँ, लोगों का रहन-सहन की दशा अपव्यय आदि के बारे में सूचना एकत्रित करने के लिए करता है।

(4) असंरचित प्रश्नावली :-

इस प्रकार की प्रश्नावली में पहले से ही प्रश्नों का निर्माण नहीं किया जाता है, बल्कि उन विषयों एवं प्रसंगों का उल्लेख किया जाता है, जिनके बारे में सूचनाएँ संकलन की तरह कार्य करती हैं।

(5) मिश्रित प्रश्नावली :-

इसमें सभी प्रकार की प्रश्नावलियों की विशेषताएँ होती हैं, इसमें खुली प्रश्नावली का निर्माण होता है, ऐसी प्रश्नावली कम और अधिक शिक्षित दोनों के लिए ही उपयोग में ली जाती है, इसमें स्पष्ट उत्तर के साथ विचार का भी जानकारी प्राप्त होता है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रश्नावली के गुण :-

① कम खर्चीला :—

यह कम खर्चीला होता है, क्योंकि इन्हें डाक द्वारा या फिर एक या दो अन्वेषकों के द्वारा क्षेत्र में वितरित किया जाता है।

② विशाल क्षेत्र एवं अधिक सूचनादाता :—

इस प्रविधि द्वारा जहाँ एक ओर विशाल क्षेत्र में दूर-दूर फैले सूचनादाता से सूचना प्राप्त की जा सकती है, वहीं परिश्रम भी कम लगता है।

③ समय की बचत :—

चूंकि सभी प्रश्नावली एकसाथ भेजी जाती हैं और अधिकतर उत्तर 10-15 दिन में ही वापस आ जाते हैं, जिससे कि समय की कॉफी बचत होती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(4) सुविधाजनक :—

इसमें शोधकर्ता एवं उत्तरदाता अपनी सुविधाजनक रंगली समय में प्रश्नावली भरता एवं उत्तर देता है।

प्रश्नावली के दोष :—

(1) चयनित प्रतिदर्श पक्षपातपूर्ण संभव :—

उत्तर चयन में पक्षपात हो सकता है क्योंकि उत्तरदाता की विषय में कोई रूचि न होने के कारण वह सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं भी दे सकता है।

(2) केवल शिक्षित लोगों के लिए उपयोगी :—

कभी-कभी विभिन्न उत्तरदाता प्रश्नों को अलग-अलग तरीके से समझते है। ऐसी गलतफहमी ठीक नहीं की जा सकती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(3) प्रश्नावली कम संख्या में भरकर वापस :—

सभी उत्तरदाता शिक्षित हो, समय पर लौटाए ऐसा संभव नहीं। अतः प्रश्नावली उत्तरदाता के पास 30-40% ही वापस आ पाती है।

(4) गहनता से जाँच में अनुपयुक्त :—

चूंकि प्रश्नावली का आकार छोटा रखना पड़ता है, इसलिए उत्तरदाता से पूर्ण जानकारी प्राप्त नहीं की जा सकती। अतः अतिविशिष्ट शोध के लिए गहनता से जाँच नहीं की जा सकती।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

6) निष्कर्ष (conclusion) :—

प्रश्नावली एक ऐसा माध्यम है, जिससे कि प्रश्नों के साथ- साथ विचारों का भी आदान- प्रदान संभव होता है। कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त करने का यह एक सुगम माध्यम है, इससे समय के साथ- साथ खर्चों में भी बचत होती है।

वहीं प्रश्नावली का दूसरा पहलू यह भी है, कि इसके लिए सभी विषयों में शिक्षित होना आवश्यक है या कभी - कभी प्रश्नावली कम संख्या में ही भरकर वापस कर दी जाती है।

Attested
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi